**भारतीय महिला पत्रकारिता का स्वरूप एवं विकास**

**: डॉ. सविता टाक**

**सहायक आचार्य हिंदी**

**मा ला व महाविद्यालय, भीलवाड़ा**

साहित्य समाज का दर्पण है, परंतु आज यदि यह कहा जाए कि पत्रकारिता समाज का दर्पण है तो गलत ना होगाl आज साहित्य का स्थान पत्र-पत्रिकाओं ने ले लिया हैl इन पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हमारा समाज मनोरंजन एवं शिक्षा का अर्जुन कर रहा हैl पत्रकारिता समाज एवं देश के प्रति हमें अपने कर्त्तव्यों का बोध कराती है और हमारे अधिकारों के प्रति हमें जागृत करती हैl पत्रकारिता समाज की विभिन्न समस्याओं को उजागर कर उनके समाधान खोजने का भी कार्य करती हैl हमारे देश में सामाजिक चिंतकों ने अनुभव किया है कि यदि हमें आगे बढ़ाना है, तो नारी को साथ लेकर ही हम उन्नति कर सकते हैं; क्योंकि बिना महिलाओं को साथ लिए हम संपूर्ण रूप से विकास नहीं कर सकते हैंl राजा राममोहन राय पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने भारत वर्ष में इस भावना को असर दिया और पत्रकारिता के पृष्ठों पर महिला विषयों की उपस्थिति दर्ज कराई जो समय के साथ बढ़ती चली गईl भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा बाला बोधिनी के प्रकाशन से मुख्यतः महिला पत्रकारिता का सूत्रपात हुआl महिला पत्रकारिता से हमारा आशय महिला जीवन पर केंद्रित पत्रकारिता जिसके माध्यम से महिलाओं में जागृति पैदा की जा सकती हैl

 हिंदी पत्रकारिता का आरंभिक रूप समवेत पत्रकारिता का थाl उसमें पुरुष अथवा महिला पत्रकारिता जैसी कोई विभाजक रेखा नहीं थीl पूरी पत्रकारिता भारतीय समाज को दृष्टि पथ में रख कि जानती थी; परंतु जब उसी समाज में रहने वाली नारी की दयनीय स्थिति पर सुधीजनों की दृष्टि गई, तो उन्होंने विचार किया कि यदि हमें अपने देश को आगे ले जाना है, तो नारी को सुसुप्त स्थिति से उद्बोधन द्वारा उत्थान का मार्ग दिखाना होगाl नारी को पत्रकारिता के क्षेत्र में आधुनिक योगदान देने के लिए प्रेरित कियाl परिणामत: आज के समाज में सभी तरह के माध्यमों में नारी का अवदान प्रशंसनीय हैl

 महिलाएँ जो कि हमारे समाज की महत्त्वपूर्ण इकाई हैं, जिनके बिना किसी भी मानव समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है और पत्रकारिता जो हमारे समाज का आईना है, जिसके माध्यम से नित्य नवीन विचारों को समाज से संप्रेषित किया जाता हैl आज पत्रकारिता हमारे जीवन की अपरिहार्य आवश्यकता और मूलभूत अंग बन चुकी है; जिसकी अनुपस्थिति की कल्पना भी नहीं की जा सकती हैl पत्रकारिता ने आज संपूर्ण विश्व को एक छत के नीचे खड़ा कर दिया है, जिसमें पूरा विश्व एक परिवार के रूप में स्थापित होता दिखाई देता हैl पत्रकारिता आधुनिक युग का एक नूतन रचनात्मक आविष्कार हैl पत्रकारिता को प्रकाश में लाने का सबसे महत्त्वपूर्ण आधार है प्रेसl

 महिला जीवन को पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से प्रकाश में लाना और सामाजिक स्तर पर उनकी आवाज ऊँची करना; तथा प्रशासनिक सीमाओं में उनका प्रभावशाली ढंग से सम्यक रूपेण प्रवेश कराना, महिला पत्रकारिता का सबसे सबल और प्रमुख पक्ष हैl वरिष्ठ पत्रकार सुश्री मधु किश्वर के अनुसार ‘‘महिला पत्रकारिता महिलाओं से संबंधित क्षेत्रों की उपलब्धियों, समस्याओं और कठिनाइयों से संबंधित हैl’’ महिला पत्रकारिता से हमारा आशय महिलाओं के अंदर जागृति पैदा करने वाली पत्रकारिता हैl नारी ने हर काल में अपनी अस्मिता की पहचान कराई हैl पत्रकारिता के आगमन से स्त्री का संबंध और सृजन निर्माण से अधिक जुड़ता जा रहा हैl आज हर क्षेत्र में स्त्री अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैl शिक्षा के प्रसार और भाषा के विकास ने स्त्री के भीतर साहस भर दिया हैl आज वह स्वयं और समाज के बारे में सोचने लगी हैl आज वह एक ऐसा समाज चाहती है, जहाँ स्त्री पुरुष समान एवं स्वतंत्र होl आज की नारी अपनी पारंपरिक भूमिकाओं से मुक्त होना चाहती है और स्वयं को एक व्यक्ति के रूप में पहचान देना चाहती हैl

 हमारे देश में समाज में स्थिति बदल रही हैl शिक्षा के प्रसार-प्रचार ने नारी में चेतना को जागृत किया है और आज की नारी समाज में अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व पाने के लिए संघर्षरत हैl समाज में अस्तित्व की पहचान के लिए लगातार मेहनत कर रही हैl वह जान चुकी है कि परंपरा आस्था एवं धार्मिक मूल्यों के आधार पर लगातार उसका शोषण अपमान होता जा रहा हैl समाज के इस दोहरे मापदंडों के विरोध में लगातार आवाज उठा रही हैl

 भारतीय महिला के विचारों और व्यक्तित्व का विस्तार करने के लिए आवश्यक है, कि महिला पत्रकारिता के अंतर्गत सामाजिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक, आर्थिक, शहरी, ग्रामीण, वैयक्तिक और शैक्षिक विषयों को समाहित किया जाएl

 महिला पत्रकारिता को योजनाबद्ध तरीके से किशोरियों में नवचेतना का स्फुरण कराकर; उन्हें जीवन के विकास की नई राहें ढूंढने को प्रेरित करना होगाl भारतीय नारी की गरिमा और अस्मिता विश्व के किसी भी देश के नारी समाज से बिल्कुल अलग हैl पत्रकारिता को इस सत्य से अपने देश के महिला समाज को परिचित कराना चाहिएl जितने भी सूचना के संसाधन हैं, उनको इस दिशा में मोड़ना चाहिए और महिलाओं के मानसिक एवं आत्मिक विकास तथा उन्नयन की दिशा में ईमानदारी से प्रयास किया जाना चाहिएl

 इस संबंध में मीराकांत लिखती है ‘‘महिला दशक में हिंदी पत्रकारिता में उभरी स्त्री की तस्वीर को इस दृष्टि से देखें तो स्पष्ट हो जाएगा कि इस दौरान भारतीय स्त्री और समाज से उसके संबंधों की जो व्याख्या हो रही थी उसमें ईमानदारी का पुट धीरे-धीरे बढ़ रहा थाl यदि यूँ कहा जाए कि स्वतंत्रता के बाद शायद पहली बार स्त्री के संदर्भ में सही सवाल पूछे गए तो अतिशयोक्ति ना होगीl’’
 सन 1874 से 1900 तक की समयावधि की महत्वपूर्ण भूमिका रहीl यह समय महिला पत्रकारिता के विस्तार का समय था और ‘बालाबोधिनी’, ‘भारत भामिनी’, ‘सुगृहणी’ और ‘वनिता हितैषी’ उसके मूल में थीl

 1900 से 1947 का समय स्वतंत्रता संग्राम का था; जब गांधीजी के आह्वान पर हजारों महिलाओं ने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लियाl जिनके माध्यम से समाज में स्त्री चेतना का इतना प्रचार-प्रसार हो चुका था, कि महिलाएँ अधिक सजग और सचेत हो रही थी और अपने अधिकारों के लिए स्वयं की आवाज उठाने लगी थी वास्तव में यह नारी जागरण काल थाl सन 1947 में देश की आजादी के बाद हिंदी पत्र-पत्रिकाओं ने व्यवसाय का रूप ले लिया और पत्र-प्रकाशक या मालिक अधिक लाभ की बात सोचने लगेl सन 1975 में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दशक और महिला वर्ष की घोषणा के बाद हिंदी पत्रकारिता की पृष्ठों पर महिला विषयों को पुनः स्थान मिलने लगाl अंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष और महिला दशक हिंदी पत्रकारिता के लिए एक महत्वपूर्ण घोषणा थी; जिसने पूरी दुनिया को महिलाओं की सामाजिक स्थिति के संदर्भ में सोचने के लिए मजबूर कर दियाl इस समय हिंदी पत्रकारिता ने नवजागरण काल की भांति प्रकाशित पत्रों की कार्यशैली के ही समान कार्य कियाl

 इस दशक की पत्रकारिता ने महिलाओं के लिए सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थिति पर समानता की बात कीl विभिन्न सरकारी योजनाओं नीतियों एवं कानूनों पर पक्ष-विपक्ष में सामग्री प्रकाशित की और इसके साथ ही महिलाओं के प्रति होने वाली हिंसा, दहेज-हत्या, बलात्कार, वेश्यावृत्ति, कामकाजी महिलाओं की समस्याओं, घर परिवार में महिलाओं की स्थिति, उनको मिलने वाले लाभ, शिक्षा, रोजगार, आदि विषयों पर गंभीर विश्लेषणात्मक समाचार प्रकाशित किएl हिंदी समाचार पत्रों में महिलाओं के लिए विशेष स्तंभ और पृष्ठ निश्चित किए गए और महिलाओं के लिए अलग से पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई, जिनमें ‘वामा’, ‘सरिता’, ‘गृहशोभा’, ‘गृहलक्ष्मी’ प्रमुख हैंl

 पत्रकारिता के क्षेत्र में यदि महिलाएँ अधिक से अधिक संख्या में प्रवेश करें, तो यह महिला जगत के हित में होगाl महिलाएँ सामाजिक विचारधारा को अधिक सशक्त रूप से परिवर्तित कर सकती हैंl वरिष्ठ पत्रकार विनोद मेहता का कथन है कि, ‘‘महिलाएँ पत्रकारिता में मानवीय पक्ष को लाती हैl’’ वर्तमान में बरखादत्त, मृणाल पांडे, अलका सक्सेना, अनीता प्रताप जैसी महिला पत्रकारों ने अपनी कार्यक्षमता से नवीन पहचान बनाईl महिला पत्रकार संगठित होकर एक स्वर में नारी पर हो रहे अपराध, उनके शोषण के खिलाफ आवाज उठाएँ और महिला उत्थान की एक सशक्त रणनीति बनाकर कार्य करें तो निश्चित ही नारी जगत का कल्याण होगाl अतः आज पुनः बालाबोधिनी, यामा, मानुषी जैसी पत्रिकाओं की आवश्यकता है; जो नारी जगत को सृजनात्मकता से जुड़े और उसे अपने शक्ति का परिचय करा सकेl

 वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पत्रकारिता का बहुत अधिक महत्त्व हैl पत्रकारिता की शक्ति और बौद्धिक संपदा के कारण ही हमारे विचारों और समाज की अभिनव क्रांति का आगमन होता रहता हैl हिंदी भाषा को परिष्कृत परिमार्जित कर उसे समृद्ध और विकसित करने और राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का श्रेय पत्रकारिता को ही हैl

 पत्रकारिता द्वारा ही युगीन परिस्थितियाँ देश के कोने-कोने में फैलीl आज की पत्रकारिता ह्रदय के अंतरतम का स्पर्श करने और जीवन का सर्वांगीण विकास करने का मूल निर्मिति कही जा सकती हैl जिस प्रकार से साधक के लिए साधना को, त्यागी के लिए उत्सर्ग को, तपस्वी के लिए काया-कष्ट तथा अनासक्ति को, कलाकार के लिए संसार के गूढ़ और रहस्यमय चित्रण को, आलोचक के लिए जीवन का स्थूल और सूक्ष्म धारा को और साहित्यिक के लिए भाव जगत को प्रकाश में लाने का मार्ग पत्रकारिता के अलावा किसी और विधा में सामर्थ्य नहीं हैl पत्रकारिता का जीवन में असाधारण स्थान हैl मानव समाज से संबंधित पत्रकारिता के अनेक स्वरूपों में महिला पत्रकारिता को विस्मृत नहीं किया जा सकता हैl

****